

# !!! नवरात्रि एक रहस्य !!!

कहते हैं, जब विनाशकाल इस धरती पर निकट था, और सृष्टि पर अज्ञान व तमोगुणी रात्रि छाई हुई थी। राग-द्वेष चरम सीमा पर था, नर-नारी अपवित्रता की ओर अग्रसर थे, कहा जाता है कि सतयुग के प्रथम राजा श्रीनारायण भी मोह निद्रा में थे। ऐसी धर्मग्लानि के समय ही परमात्मा शिव ने त्रिदेवों के द्वारा भारत की कन्याओं को ज्ञान योग तथा दिव्य गुण रूपी शक्ति से सुसज्जित किया। इन शक्तियों के कारण ही आदि शक्ति अथवा शिव शक्ति कहलाई। यह ज्ञान ही तीसरा नेत्र था। सहनशीलता, संतुष्टता, अंतर्मुखता, सौहार्द आदि दिव्य शक्तियाँ ही अष्ट भुजाएँ थीं। इन्हीं शक्तियों ने भारत के नर-नारियों को जगाया तथा उन्हें उत्साहित करके आसुरी प्रवृत्तियों का नाश किया। उनका अंश भी रहने नहीं दिया। इसी का यादगार है कि सूर्य के वंश में शुम्भ-निशुम्भ नाम के दो असुर पैदा हुए। उनके प्रधान कार्यकर्ता का नाम रक्तबिन्दु था और सेनापति



का नाम धुम्रलोचन था। उनके दो मुख्य सहायकों का नाम चंड और मुंड था। ऐसी मान्यता है कि शिव की शक्ति से आदि कुमारी प्रकट हुई, उनके विकराल रूप से काली प्रकट

हुई, उसने चंड और मुंड का विनाश किया, फिर कालिका ने अपनी योगिनी शक्ति द्वारा धुम्रलोचन और रक्तबिन्दु का विनाश किया। आज नवरात्रि में इन देवियों द्वारा दिये गए ज्ञान की यादगार में कलश की स्थापना की जाती

है। उन द्वारा जगाये जाने की स्मृति में आज भक्त जन जागरण करते हैं तथा योग द्वारा आत्मिक प्रकाश जागृत करने की स्मृति में भक्त अखण्ड दीप जलाते हैं। उन कन्याओं के महान कर्तव्य के कारण ही वे हर वर्ष कन्या पूजन करते हैं और सरस्वती दुर्गा आदि से प्रार्थना करते हैं कि हे अम्बे माँ मेरी ज्योति जगा दो। नवरात्रि में लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती की पूजा होती है। लक्ष्मी से धन मांगते हैं, सरस्वती विद्या की देवी है, उनसे बुद्धि मांगते हैं और दुर्गा से शक्ति मांगते हैं। रावण पर विजय पाने के लिए शक्ति की आवश्यकता है और शक्ति आंतरिक है। क्योंकि विकार अर्थात् रावण आंतरिक दुर्बलता के कारण ही प्रकट होते हैं। अब ये दुर्गा इत्यादि देवियों जिनका कीर्तन करते समय लोग शक्ति तथा बुद्धि बल मांगते हैं, वे कौन थीं। वास्वत में ये देवियों शिव की संतान थीं जो शिव शक्तियाँ या ब्रह्मापुत्रियाँ कहलाती थीं।

समय के साथ-साथ आज खुशी के मायने बदल चुके हैं। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों में, भौतिक वस्तुओं में, सुख-सुविधाओं एवं सम्बन्धों में खुशी तलाशने का प्रयास कर रहा है। मनुष्य आज आवश्यकताओं के सीमित दायरों से निकलकर इच्छाओं के भँवर में फँस चुका है। वह जितना ही अपनी इच्छाओं को पूरा करने का प्रयत्न करता है उतना ही उसकी इच्छाएँ बढ़ती जाती हैं। आज मनुष्य इसलिए भी खुश नहीं रह पाता क्योंकि या तो वो अतीत में जीता है या फिर भविष्य में। यदि हम अतीत में जी रहे हैं तो बीती बातों को सोच-सोचकर अभी वर्तमान में भी दुःखी होते रहेंगे। इसका कारण यह है कि उस बात को हमने अपने मन में ही रखा है, निकाला नहीं है। अतीत को हम जितनी बार दोहराते हैं, तो वही अतीत हमारा वर्तमान बन जाता है और फिर यह हमारे भविष्य पर प्रभाव डालता है। अतीत की तरह ही हम कहीं न कहीं भविष्य में भी बहुत ज़्यादा जीते हैं, हम खुशी को भविष्य में तलाशने का प्रयास करते रहते हैं। हम ऐसा सोचने लगते हैं कि कोई वस्तु हमें प्राप्त होगी तब हम खुश होंगे। उस वक्त हमारा सारा ध्यान केवल इस बात पर होता है कि जब ये होगा तब खुशी मिलेगी। जब हमारी खुशी किसी चीज़ पर निर्भर होती है तो भय स्वतः ही आ जाता है, क्योंकि जहाँ निर्भरता है वहाँ भय की भावना तो होगी ही। हम कितनी भी कोशिश कर लें, भय का एक विचार आ ही जाएगा। खुशी और भय दोनों कभी भी एक साथ नहीं हो सकते। इस भय के कारण हम अपने वर्तमान की खुशी को खो देते हैं और केवल भययुक्त होकर रह जाते हैं।



कुछ मनुष्य केवल किसी न किसी क्षणिक प्राप्ति के पीछे अपनी खुशियाँ गंवाते रहते हैं। वे लोग केवल प्राप्ति पर ही निर्भर हो जाते हैं। वे वास्वत में खुश नहीं होते हैं, क्योंकि वे हमेशा दूसरों की प्राप्ति की ओर देखते रहते हैं। जिस पल वो कुछ प्राप्त करते हैं तो



**यदि मनुष्य सही मायनों में स्थायी खुशी को आज के तमोगुणी वातावरण में प्राप्त करना चाहता है तो उसका एकमात्र स्रोत स्वयं के भीतर उस खुशी को तलाशना होगा, उसे जागृत करना होगा।**

उन्हें राहत की अनुभूति होती है, परंतु इसमें केवल राहत होती है, खुशी नहीं! और ये भी थोड़ी देर के लिए होता है। कई मनुष्य रिश्ते-नाते एवं संबंधों में खुशी ढूँढते रहते हैं। यदि रिश्तों में कुछ मन-मुटाव हो गया तो उनकी खुशी गायब हो जाती है। रिश्तों को वे खुशी का आधार मान बैठते हैं। उनकी खुशी जो स्वयं उनके हाथ में है, उसे वह दूसरों से प्राप्त होने वाली चीज़ समझ लेते हैं। वे स्वयं के अंदर झाँकने का कभी प्रयास ही नहीं करते, वे कभी यह देखते ही नहीं कि स्वयं उनके भीतर खुशी का भंडार भरा है।

यदि मनुष्य सही मायनों में स्थायी खुशी को आज के तमोगुणी वातावरण में प्राप्त करना चाहता है तो उसका एकमात्र स्रोत स्वयं के भीतर उस खुशी को तलाशना होगा, उसे जागृत करना होगा जिसके लिए कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। जैसे कि:-

- हम दूसरों को अपने दुखों के लिए दोष देना बंद कर दें।
- सुबह उठते ही खुशी का संकल्प करें। स्वयं से कहें कि आज कुछ भी हो जाए, मुझे खुश रहना है।

- नकारात्मक संकल्पों को अपने मन में प्रवेश न करने दें। अपना नज़रिया सदैव सकारात्मक रखें।
- खुशी को दूसरों से प्राप्त होने वाली वस्तु न समझें, स्वयं में ढूँढें।
- अतीत एवं भविष्य की बातों को छोड़कर वर्तमान में जीना सीखें।
- किसी भी अल्पकालिक प्राप्ति को अपनी खुशी का आधार न बनायें।
- सदैव हर परिस्थिति में संतुष्ट रहें और सभी को संतुष्ट करने का प्रयास करें।
- खुशी को व्यक्ति, वैभव, वस्तु इत्यादि सीमाओं में न बांधें।
- किसी भी असफलता पर निराशा न हों बल्कि सफलता प्राप्त करने के लिए दुगुना प्रयास करें किंतु खुशी एवं सरलता के साथ।
- अपने मन एवं मस्तिष्क पर किसी बात का बोझ न डालें, सदैव हल्के रहें।

सदैव यह याद रखें कि खुशी हमारी स्वयं की रचना है। आप धीरे-धीरे परिवर्तित करने का प्रयास करें।



**नई दिल्ली।** केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री पीयूष गोयल को ब्रह्माकुमारीज द्वारा लगाये गये एशिया के सबसे बड़े सोलर प्लांट की जानकारी देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.जयसिन्हा, मा.आबू, ब्र.कु.रघु, ब्र.कु.सविता तथा ब्र.कु.फातिमा।



**भोपाल-म.प्र.।** राज्यमंत्री लालसिंह आर्य को ब्रह्माकुमारीज की 80वीं वर्षगांठ का निमंत्रण देने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु.प्रीति, ब्र.कु.नेहा तथा ब्र.कु.दिलीप।



**पणजी-गोवा।** केन्द्रीय मानवाधिकार संस्थान के अध्यक्ष मिलिंद दहिवले ब्र.कु.शोभा को 'समाज गौरव सम्मान पुरस्कार-2017' से सम्मानित करते हुए।



**इंदौर।** शिव जयंति के अवसर पर सात दिवसीय राजयोग शिविर कार्यक्रम में विधायक महेन्द्र हाडिया, ब्र.कु.हेमलता, ब्र.कु.अनिता, पार्षद प्रेम जारवाल तथा ब्र.कु.उषा।



**इटारसी।** एस.डी.एम. अभिषेक गहलोत से आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु.सरिता, ब्र.कु.रूपवती तथा ब्र.कु.जितेन्द्र।



**दावणगेरे-कर्नाटक।** शिव जयंति पर शांति रैली को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए पूर्व मेयर श्रीमती अश्विनी, डॉ.सुशीलम्मा, ब्र.कु.तीला तथा अन्य।